शोध मंथन Vol. XII No.II April-June 2021 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

"इन्दौर जनपद (म0प्र0) में जनसंख्या वितरण प्रतिरूप पर प्राकृतिक एवं मानवीय क्रियाओं का प्रभाव"

प्राप्तिः 22.05.2021
स्वीकृतः 16.06.2021

पंकज कुमार शर्मा
शोध छात्र, भूगोल विभाग,
दी0द0उ0गो0 विश्वविद्यालय, गोरखपुर
ईमेलः Pksharma939@gmail.com

सारांश

किसी भी देश की जनसंख्या या मानव संसाधन उसकी सबसे बडी पूँजी होती है। जनसंख्या के उपयुक्त आकार और श्रेष्ठ गुणात्मक विशेषताओं के आधार पर ही किसी भी देश का विकास निर्भर करता है। जनसंख्या किसी भी राष्ट्र में वस्तुओं व सेवाओं का उत्पादन, वितरण एवं उपभोग करती है तथा देश के आर्थिक विकास का संवर्धन करती है इसलिए जनसंख्या को देश के लिए साधन और साध्य भी माना जाता है, परन्तु जनसंख्या का समुचित वितरण आवश्यक होता है, जनसंख्या के वितरण को प्रभावित करने वाले मुख्य तत्व जैसे प्राकृतिक जैसे मिट्टी, उच्चावच, जल के आलावा मानवी तत्व जैसे– यातायात का विकास, शिक्षा का विकास, औद्योगिक विकास, सामरिक स्थिति आदि जनसंख्या के घनत्व को प्रभावित करते हैं।

मुख्य शब्द *: जनसंख्या घनत्व, जनसंख्या वितरण प्रतिरूप, सामरिक स्थिति।*

प्रस्तावना

भौगोलिक अध्ययन के मुख्य विषय क्षेत्र में जनसंख्या अध्ययन एक प्रमुख तत्व है एवं भूगोल जनसंख्या को संसाधन बनाने का मार्ग प्रशस्त करता है। किसी क्षेत्र के विकास में वहाँ की जनसंख्या का अहम योगदान होता है, कुशल एवं शिक्षित जनसंख्या का विकासः प्राकृतिक स्थिति–विस्तार, जलवायु दशा एवं उच्चावचीय गठन तथा संचार सुविधा, संसाधन की उपलब्धता, सांस्कृतिक और सामाजिक मांग के अनुसार ही हो पाता है दुसरे शब्दों में उक्त दशाये ही मानव को संसाधन के रूप में विकसित करती है एवं उक्त परिस्थितियाँ ही जनसंख्या के वितरण को प्रभावित करतीं हैं। आदिकाल से वर्तमान तक मानव अपनी आवश्यकता के अनुसार उपलब्ध अवसरों कों प्राप्त कर सांस्कृतिक मानव के रूप में विकसित किया है एवं विभिन्न रूप के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक तानाबाना का विकास कर सभ्य प्राणी के रूप में विकसित हुआ है। कभी–कभी औद्योगिक विकास की होड में मानव का केन्द्रीयकरण होने लगता है एवं जनसंख्या का असंतुलित जमघट लगने लगता है जिससे सामाजिक स्तर गिरने लगते है इससे विविध प्रकार की समस्याये उत्पन्न होती है। इन समस्याओं के निराकरण के लिए जनसंख्या के विविध पहलुओं पर शोध कार्य किया जाता रहा है और जनसंख्या को संसाधन के रूप में विकसित किया जाता रहा है।

अध्ययन क्षेत्र

इन्दौर जनपद मध्य प्रदेश का एक समृद्ध जनपद है। इसका विस्तार $22^0.20'$ उत्तरी अक्षांश से $23^0.05'$ उत्तरी अक्षांश और $75^0.26'$ पूर्वी से $76^0.14'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। इसके उत्तर में महाकाल नगरी उज्जैन स्थित है जबकी दक्षिण में पश्चिमी निमार जनपद है, पूर्व में देवास जनपद स्थित है तो पश्चिम में धार जनपद स्थित है। इसकी कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 3898 वर्ग किमी0 है। भारत में इन्दौर महानगर मीनी मुम्बई के नाम से विख्यात महानगर इसी जनपद में स्थित है जो अपनी स्वच्छता से भी अपनी पहचान स्थापित कर चुका है। यहा शिक्षा के विभिन्न संस्थान जैसे – आई0आई0टी0, आई0आई0एम0, विश्वविद्यालय एवं मेडिकल कालेज आदि से सम्पन्न है। शिक्षा की समुचित व्यवस्था से जहाँ देश विदेश से छात्र–छात्राओं को आकर्षित करता है तो वही औद्योगिक क्षेत्र में अग्रणी स्थान रखने के कारण स्थानीय एवं बाहरी कुशल एवं अकुशल सभी प्रकार के व्यक्तियों को रोजगार प्रदान करता है। ऐतिहासिक दृष्टि से समृद्ध यह जनपद ऐतिहासिक काल में होल्कर सम्राज्य की राजधानी रहा है। यहाँ स्थित विविध प्रकार के स्थापत्य कला के उदाहरण – रजवाडा पैलेस, गॉधी महल, कांच मंदीर, लालाबाग पैलेस, छतरी महल, खजराना गणेश मन्दिर, आसीरगढ़ का किला जहाँ पर्यटकों को आकर्षित करता है तो वहीं यहाँ की प्राकृतिक सौन्दर्य भी जैसे–झीले (लोटस लेक), जलप्रपात (मेहदी जलप्रपात, बभनियाकुंद प्रपात, धरमपुरी प्रपात, तीन्चा प्रपात) एवं पहाडिया (जनापाव पहाड़ी), मनमोहक दृश्य प्रस्तुत करती है।

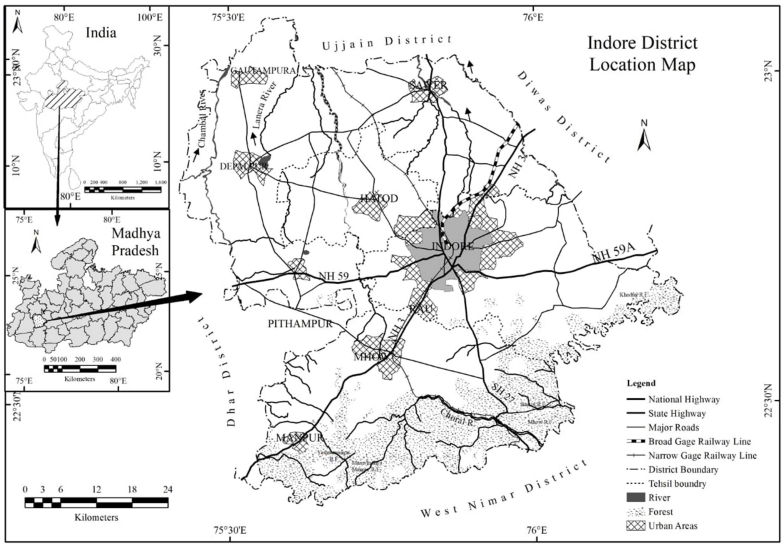

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य अध्ययन क्षेत्र में विद्यमान भौतिक एवं मानवीय दशाओं का अध्ययन करते हुए जनसंख्या वितरण प्रतिरूप पर इनके प्रभाव का विश्लेषण करने साथ ही साथ उन कारकों को भी रेखांकित करना है जो सनसंख्या वितरण प्रतिरूप को प्रभावित करते है।

आँकाडों का स्रोत

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र में आँकडों एवं सूचनओं केसंग्रह हेतु द्वितीयक आँकडों का प्रयोग किया गया है जनसंख्या सम्बंधी आँकडों के लिए इन्दौर जनपद की जनगणना पुस्तिका 2001 एवं 2011 के प्रकाशित स्रोतों, जनगणना पुस्तिका, जनपद गजेटियर, जनपद सांख्यिकी पत्रिका से जनसंख्या की विभिन्न विशेषताओं से सम्बंधित आँकडे लिए गए हैं। प्रस्तुत अध्ययन में क्षेत्र की संम्पूर्ण जनसंख्या की विशेषताओं को आंशिक परिवर्तनों एवं क्षेत्रीय स्वरूपों में स्पष्ट करने के लिए क्रमबद्ध उपागम को अपनाया जायेगा।

तालिका संख्या – 1

इन्दौर जनपद : जनसंख्या वितरण प्रतिरूप 2011

तहसील / विकास खण्ड	भौगोलिक क्षेत्रफल हेक्टेयर में ग्रामीण पत्रकों के अनुसार	जनसंख्या 2001	जनसंख्या 2011	जनसंख्या घनत्व (प्रति हेक्टेयर में)	जनसंख्या वृद्धि (दशाब्दी में)
तहसील देपालपुर	87527	189350	228101	2.60	20.47
तहसील इन्दौर	91552	1723782	2389511	26.10	30.62
तहसील महूँ	102708	304363	361937	3.52	18.95
तहसील सांवेर	64348	164009	197835	3.07	20.62
तहसील हातोद	36962	84323	99313	2.68	17.78
जनपद इन्दौर	383097	2465827	3276697	8.55	32.88

स्रोत :– जिला सांख्यिकी पत्रिका 2014 जनपद इन्दौर।

जनसंख्या का स्थानिक वितरण प्रतिरूप

प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या को आधार बनाकर तहसीलवार जनसंख्या घनत्व की गणना की गयी है। समान्तया जनसंख्या वितरण को जनसंख्या घनत्व के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है जनसंख्या घनत्व से तात्पर्य प्रति इकाई भूभाग पर निवाशित जनसंख्या से है। तालिका संख्या–1 से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र का औसत जनसंख्या घनत्व 8.5 व्यक्ति प्रति हेक्टेयर है। औसत घनत्व की तुलना में विभिन्न तहसीलों के धनत्व में काफी अन्तर दृष्टिगत होता है जैसे– जहाँ देपालपुर का जनघनत्व 2.60 व्यक्ति प्रति हेक्टेयर जो औसत 8.55 व्यक्ति प्रतिहेक्टेयर से ऋणत्मक अन्तर दिखता है तो वहीं इन्दौर तहसील के 26.10 व्यक्ति प्रति हेक्टेयर से 18 व्यक्ति प्रति हेक्टेयर का धनात्मक अन्तर दिखाता है। महूँ, सांवेर एवं हतोद तहसीलो का घनत्व क्रमशः 3. 52 व्यक्ति प्रति हेक्टेयर, 3.07 व्यक्ति प्रति हेक्टेयर, 2.68 व्यक्ति प्रति हेक्टेयर का अन्तर भी औसत से पर्याप्त विचलित प्रतीत होता है। उपरोक्त व्यख्या से स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या वितरण प्रतिरूप असमान है जिसके विभिन्न प्राकृतिक एवं मानवीय कारक है।

अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या वितरण को प्रभावित करने वाले कारक

जनसंख्या वितरण प्रतिरूप को प्रभावित करने वाले कारकों को दो मुख्य भागों में बाटकर स्पष्ट किया जायेगा।

जनसंख्या वितरण प्रतिरूप को प्रभावित करने वाले कारकों में प्रथम प्राकृतिक कारक के अन्तर्गत अध्ययन क्षेत्र के प्राकृतिक तत्व जैसे उच्चावचीय विसमता, भूमि की प्रकृति, वन भूमि आदि है। जनपद के दक्षिण क्षेत्र में आरक्षित वन भूमि एवं पहाडियां तथा दक्षिण पूर्व में बीहड और पथरीली भूमि के कारण जनघनत्व कम पाया जाता है। उत्तर एवं उत्तर पश्चिम में नदियों (चम्बल, क्षिप्रा, खान, गम्भीर आदि) नदि क्षेत्र है एवं छोटी–छोटी पहाडिया विषम भूमि उत्पन्न करती है जो जनसंख्या वितरण को प्रभावित करतीं हैं। इन्दौर महानगर के पश्चिम में अपेक्षाकृत समतल भूमि होनें के कारणसघन आबाद क्षेत्र है तो वहीं उत्तर पूर्व एवं पूर्व के क्षेत्र में मानव बसाव के लिए अनुकूल दशा उतपन्न होने के कारण यह क्षेत्र भी सघन आबाद है।

जनसंख्या वितरण को प्रभावित करने वाले कारकों में मानवी कारक मुख्य रूप से प्रभावित करता है। अध्ययन क्षेत्र के मध्य में इन्दौर महानगर की स्थिति, एन0एच0–3, एन0एच0–59, एस0एच0–27 परिवहन मार्ग, इन्दौर का शैक्षणिक एवं औद्योगिक केन्द्र के रूप में विकसित परिस्थितियाँ, सांचार की उपयुक्त व्यवस्था से प्रदेश के अलग–अलग क्षेत्रों में जनसंख्या वितरण का विविध प्रतिरूप स्पष्ट होता है जैसे–एन0 एच0 3 के सहारे उत्तर पूर्व के मंगलाया सडक से दक्षिण पश्चिम में महूं (डॉ0 अम्बेडकर नगर) तक लगभग 45 किमी0 का क्षेत्र सघन आबादी वाला क्षेत्र है जो इस क्षेत्र का सर्वाधिक सघन आबाद क्षेत्र है। इसी प्रकार जिन स्थानों पर प्रशासनिक केन्द्र (विकास खण्ड मुख्यालय, तहसील मुख्यालय, जिला मुख्यालय) आदि की स्थिति है वह क्षेत्रजनसंख्या के केन्द्र के रूपमें विकसित हुए है। संचार सुविधा, प्रशासनिक केन्द्रों के आलावा उच्च शैक्षणिक संस्थान भी जनसंख्या को आकर्षित करतें हैं। जैसे– आई0 आई0 टी0 इन्दौर, आई0 आई0 एम0 इन्दौर एवं श्री अरविन्दो मेडिकल जैसे संस्थान जनसंख्या समूह के रूप में विकसित हो रहे हैं।

उक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि एक तरफ किन्ही स्थानों पर जनसंख्या का जमघट है, वहाँ प्राकृतिक रूप से उपयुक्त दशा एवं संचार व्यवस्था उपयुक्त है तो विरल आबादी क्षेत्रों में निष्ठुर प्रकृति के साथ–साथ संचार सुविधाओं की अनुपलब्धता है।

अध्ययन क्षेत्र के जनसंख्या घनत्व की क्षेत्रीय विषमता का अध्ययन 5 वर्गो में विभाजित कर किया गया है। जिसका विवरण निम्नवत है

तालिका संख्या – 2

व्यक्तियों की संख्या	संवर्ग	ग्रामों की संख्या विभिन्न तहसील में					
		देपालपुर	इन्दौर	महूँ	सांवेर	हतोद	कुल गॉव
8<	उच्च	3	11	12	4	0	30
6–8	मध्यम उच्च	2	2	12	6	1	23
4–6	मध्यम	6	16	25	12	4	63
2–4	निम्न मध्यम	50	40	60	58	24	232
2>	निम्न	86	57	62	45	30	280
कुल गांव		147	126	171	125	59	628

नोट– कुल 628 गाँव में से 15 गाँव गैर आबादी क्षेत्र हैं।

Source: - Census of India 2011

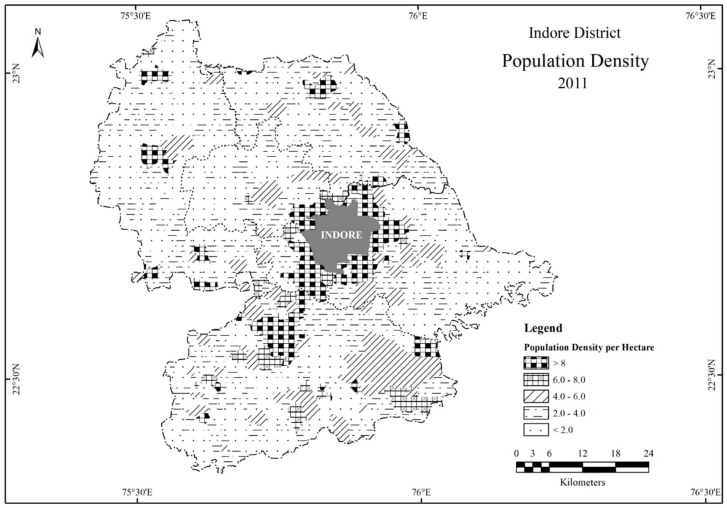

उच्च वर्ग

इस वर्ग के अन्तर्गत 8 व्यक्ति प्रति हेक्टेयर से अधिक सघन बसे ग्रामों एवं नगरो को लिया गया हैतालिका संख्या–2 का अध्ययन करने के साथ–साथ मानचित्र का अवलोकन किया जाय तो स्पष्ट है कि नगरों के अतिरिक्त कुल 30 गाँव उक्त संख्या से अधिक घने आबाद हैं। इन्दौर तहसील में मुख्य महानगर क्षेत्र के अलावा 11 गाँव उच्च घनत्व वाले वर्ग में आते है। जो महानगर के आस–पास के ही गाँव है, इन्दौर नगर से लगे महूँ तहसील के गाँव उच्च घने (12 गाँव) बसे है जबकि देपालपुर और सांवेर में क्रमशः 3 एवं 4 गाँव ही है तो, हतोद में एक भी गाँव उच्च वर्ग में नहीं आता है।

मध्यम उच्च वर्ग

इस वर्ग के अन्तर्गत 6–8 व्यक्ति प्रति हेक्टेयर सघन बसे ग्रामों एवं नगरो को लिया गया हैतालिका संख्या–2 एवं मानचित्र का अवलोकन किया जाय तो स्पष्ट है कि नगरों के अतिरिक्त कुल 23 गाँव इस वर्ग में आते है जिसमें से सर्वाधिक महूँ में 12, सांवेर में 6 गाँव है तो देपालपुर एवं इन्दौर में 2–2 गाँव है एवं हतोद में मात्र एक गाँव ही है।

मध्यम वर्ग

इस वर्ग के अन्तर्गत 4–6 व्यक्ति प्रति हेक्टेयर सघन बसे ग्रामों एवं नगरो को लिया गया हैतालिका संख्या–2 एवं मानचित्र का अध्ययन किया जाय तो स्पष्ट है कि नगरों के अतिरिक्त कुल 63 गाँव इस वर्ग में आते है जिसमें से सर्वाधिक महूँ में 25 गाँव हैं तथा सांवेर में 6 गाँव, देपालपुर एवं इन्दौर में 2–2 गाँव है एवं हतोद में मात्र एक गाँव ही इस वर्ग में आता है।

निम्न मध्यम वर्ग

इस वर्ग के अन्तर्गत 2–4 व्यक्ति प्रति हेक्टेयर सघन बसे ग्रामों एवं नगरो को लिया गया है तालिका संख्या–2 एवं मानचित्र का अध्ययन किया जाय तो स्पष्ट है कि नगरों के अतिरिक्त कुल 232 गाँव इस वर्ग में आते है जिसमें से सर्वाधिक महूँ में 60 गाँव, सांवेर, में 58 गाँव, देपालपुर में 50 गाँव, इन्दौर में 40 तथा हतोद में 24 गाँव निम्न जनघनत्व वाले गाँव है।

निम्न वर्ग

इस वर्ग के अन्तर्गत 2 से कम व्यक्ति प्रति हेक्टेयर सघन बसे ग्रामों एवं नगरो को लिया गया हैतालिका संख्या–2 एवं मानचित्र का अध्ययन किया जाय तो स्पष्ट है कि नगरों के अतिरिक्त कुल 280 गाँव इस वर्ग में आते है जिसमें से सर्वाधिक 86 गाँव देपालपुर में, 62 गाँव महूँ में, 57 गाँव इन्दौर में तथा सावेंर एवं हतोद में क्रमशः 45 और 30 गाँव सम्मिलित है। इस वर्ग के अन्तर्गत सर्वाधिक न्यून सघन बसे गाँव वाला तहसील देपालपुर नदियों एवं पहाडिंयों से आच्छादित है ज्ञातव्य है कि अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत 15 गाँव गैर आबादी वाले भूःभाग है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त व्याख्या एवं तालिकाओं तथा मनचित्र का अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र का जनसंख्या वितरण स्वरूप असमान है। जिन क्षेत्रों में प्राकृतिक एवं मानवीय दशायें अनुकूल है। जैसे संचार साधन , रोजगार की उपलब्धता, प्रशासनिक केन्द्र, कृषि भूमि उपलब्धता, शैक्षणिक संस्थान, भौतिक संसाधनों की उपलब्धता, बाजार आदि उपलबध है वहाँ जनसंख्या का संकुल पाया जा रहा है जबकि जिन क्षेत्रों में वन भूमि, पहाडियाँ, पठारी एवं पथरीली भूमि, वीहड क्षेत्र, संचार सुविधाओं का अभाव, कृषि के लिए प्रतिकूल दशायें आदि कारण जनसंख्या को विकर्षित कर रहीं हैं एवं इन क्षेत्रों में विरल आबादी पाई जा रही है। स्पष्ट है कि, जनसंख्या के असमान वितरण का समुचित नियोजन किया जाना चाहिए। इसके लिए विकास केन्द्र नियोजन कर विभन्न सेवा केन्द्र को विकसित करनें की आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. श्रीवास्तव,प्रदीप कुमार (2012) परशरामपुर विकासखण्ड (जनपद बस्ती) में जनसंख्या वृद्धि का एक भौगोलिक अध्ययन, भूतल दिग्दर्शन, भौगोलिक विकास शोध संस्थान, गोरखपुर।
2. सिंह, संगीता (2019) *इन्दौर जिले में अपराध प्रतिरूपः एक भौगोलिक अध्ययन,* जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर।
3. जिला सांख्यिकी पुस्तिका वर्ष–2014
4. समाजिक आर्थिक समीक्ष (2014) जनपद–इन्दौर
5. District Hand Book of Indore-2011
6. Tiwari, Era (2017) Climate Change and Agriculture – A Study of Indore District ,Devi Ahilya Vishwavidyalaya Indore.